THE NARRATIVE

www.thenarrativeworld.in

तियानमेन नरसंहार

कम्युनिस्ट चीन द्वारा

प्रथम संस्करण

A VISUAL HANDBOOK BY

THE NARRATIVE

समर्पित

चीनी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा किए गए
तियानमेन चौक नरसंहार में बलिदानी
लोकतंत्र समर्थकों को समर्पित

Concept, content and graphic design by team **The Narrative**

Copyright © 2021 I All rights reserved.

अनुक्रमणिका

03 **प्रस्तावना**

1989 के वसंत ऋतु के अंत तक, चीन संकट में आ चुका था।

05

टाइमलाइन

यहाँ घटित हुई सभी घटनाओं को उनकी तिथि के साथ दर्शाने का प्रयास किया गया है

16

तियानमेन चौक नरसंहार चित्रों में

प्रदर्शन से नरसंहार तक

18

अंतरराष्ट्रीय मीडिया और तियानमेन चौक नरसंहार

नरसंहार के दौरान अंतरराष्ट्रीय मीडिया समूह उपस्थित था।

21

वैश्विक प्रतिक्रिया

दुनिया के तमाम बड़े नेताओं व राष्ट्र अध्यक्षों ने इस घटना की निंदा की।

26

किसकी क्या भूमिका थी

इस पूरी घटना के मुख्य प्रणेताओं के किरदार

28

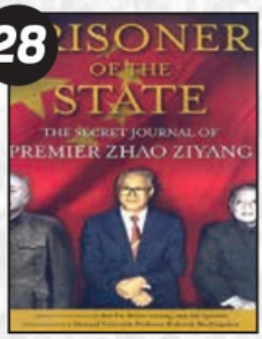

इस विषय पर पुस्तकें जो पढ़नी चाहिए

29

हमारे बारे में

राष्ट्र निर्माण में सहयोग का प्रयास

प्रस्तावना

1989 के वसंत ऋतु के अंत तक, चीन संकट में आ चुका था। दूर–दराज के शहरों से लेकर राजधानी बीजिंग तक चीन में विरोध आंदोलन, प्रदर्शन, मार्च, धरना और भूख हड़ताल की बातें सामने आ रही थी।

इन विरोधों का नेतृत्व चीन के शिक्षित युवा, विश्वविद्यालय और कॉलेज के छात्र कर रहे थे। इसके अलावा इस विरोध प्रदर्शन को हाईस्कूल के छात्रों, कारखाने के श्रमिकों, किसानों, कार्यालय कर्मचारियों और अन्य नागरिकों द्वारा समर्थन हासिल था।

यह पूरा विरोध प्रदर्शन सरकारी तंत्र और राजनीतिक तंत्र के सुधार की मांग के रूप में शुरू हुआ। छात्रों ने दावा किया कि सरकार की एकमात्र राजनीतिक पार्टी, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) ने अपने पार्टी और सरकार में भ्रष्टाचार की अनदेखी की।

यह अपने नागरिकों की वैध और कानूनी शिकायतों को सुनने में पूरी तरह विफल रहा। जैसे–जैसे सप्ताह बीतता गया, छात्र विरोध और आंदोलन बढ़ता गया और मजबूत होता गया।

आंदोलन की व्यापकता से चीनी कम्युनिस्ट सरकार हैरान थी। चीन जितना बड़ा है उतने ही बड़े स्तर पर सरकार को नागरिकों पर नियंत्रण रखने की आदत थी। कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने बीजिंग में सरकारी केंद्र, झोंगनहाई के अंदर से बड़ी चिंता के साथ विरोध प्रदर्शन का आंकलन किया। उन्होंने प्रदर्शनकारियों को ख़तरे के रूप से देखा क्योंकि विरोध आंदोलन बीजिंग के तियानमेन स्क्वायर में झोंगनहाई के पास हो रहा था।

अप्रैल से शुरू होकर पूरे मई 1989 तक हजारों की संख्या में प्रदर्शनकारी और उनके समर्थक प्रतिदिन सार्वजनिक चौक पर एकत्रित होने लगे।

छात्रों ने मांग की कि उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी बाहर आएं व उनसे मिलें। किंतु सरकार और छात्रों द्वारा बातचीत में किए गए कुछ प्रयास जल्दी ही ख़त्म हो गए।

छात्रों ने खुद को संगठित करना, अपनी मांगों को प्रचारित करना और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समर्थकों तक पहुंचना शुरू कर दिया। इस बीच, चीनी नेताओं ने बंद दरवाजों के पीछे विरोध को समाप्त करने के बड़ी गतिविधियाँ शुरू की।

जल्द ही छात्रों को यह विश्वास हो गया कि सरकार का उनकी मांगों को सुनने का कोई इरादा नहीं है। सरकार को लगने लगा कि विरोध आंदोलन के पीछे छात्र राजनीति से कहीं ज्यादा बड़ा और खतरनाक कुछ है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

ने इस आंदोलन में सरकार को गिराने के लिए काम कर रहे पार्टी के राजनीतिक दुश्मनों का हाथ देखा।

इन सब के बाद गतिरोध जारी रहा और प्रदर्शनकारियों और सरकारी नेताओं के बीच अविश्वास दिखाई देने लगा। दोनों पक्षों के हार्ड–लाइनर्स ने अपने अपने हिस्से में गतिविधि शुरू की।

मई के अंत तक सरकार ने कठोरतम नीति अपनाने का फैसला किया। चीनी कम्युनिस्ट सरकार ने विरोध को समाप्त करने और तियानमेन चौक को खाली करने के लिए सेना को लामबंद किया। लेकिन कई छात्रों और नागरिकों ने सैनिकों और टैंकों को बीजिंग में जाने से रोकने का प्रयास किया।

इस दमन का परिणाम मृत्यु, चोटें और शहर में अराजकता थी। इस संघर्ष ने छात्र नेताओं को जेल या निर्वासन में भेज दिया और कुछ प्रमुख सरकारी अधिकारियों के पतन का कारण भी बना।

तियानमेन चौक पर हुई घटनाओं के सामने आते ही अंतरराष्ट्रीय समुदाय पूरी तरह आश्चर्यचकित हो गया। दुनियाभर के टीवी प्रसारणों और प्रकाशनों में हर जगह लोगों ने निहत्थे चीनी नागरिकों के नेतृत्व में चल रहे विरोध को कुचलने के लिए चीनी कम्युनिस्ट सरकार को सैनिकों, टैंकों और सैन्य हथियारों का उपयोग करते हुए देखा।

तियानमेन चौक नरसंहार को दुनिया के नागरिक अधिकारों के संघर्ष की लंबी सूची में जोड़ा गया था। लेकिन प्रश्न यह है कि आख़रि बीजिंग में टकराव इस स्तर तक कैसे पहुँच गया?

1989 के वसंत की घटनाओं और उसके बाद की घटनाओं को समझना एक कठिन कार्य है। चीन की कम्युनिस्ट सरकार ने साफ तौर पर कहा था कि वह बाहरी दुनिया को अपने फैसलों के बारे में बताने की कोई बाध्यता नहीं समझता।

चीनी सरकार ने घटनाओं से संबंधित कुछ दस्तावेज और बयान जारी किए थे। इसने पश्चिमी समाचार मीडिया और अन्य संगठनों द्वारा उत्पन्न तथ्यों, आंकड़ों, प्रत्यक्षदर्शी खातों और मानवाधिकार शिकायतों को पूरी तरह खारिज कर दिया था।

चीन के बाहर में जो कुछ जाना जाता है और प्रकाशित किया गया है, वह पश्चिमी पर्यवेक्षकों और उन चीनी छात्रों से आता है जो देश छोड़कर भाग गए थे। चीनी सरकार घटनाओं के उन संस्करणों के कई महत्वपूर्ण विवरणों को कम्युनिस्ट विरोधी प्रचार के रूप में खारिज कर देती है।

यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि प्रदर्शनकारी छात्र पार्टी नेताओं से क्या मांग कर रहे थे और किस वजह से विरोध बढ़ रहा था? इसका प्रभाव चीन और उसके बाहर महसूस किया जाना अभी भी जारी है।

टाइम लाइन

Vindicating Tiananmen Square
The New York Times
TROOPS ATTACK AND CRUSH BEIJING PROT
THOUSANDS FIGHT BACK, SCORES ARE K
Khomeini, Imam of Iran And Foe of U.S., Is Dead
Bloodbath
Army steps up battle for Beiji
FINANCIAL TIMES
Troops Roll Through Beijing to C
Hundreds Feared Killed as Chin
Los Angeles Times
Fire on Beijing Crowds
THE SUN
demonstrators stun China
Acts of butchery against
Orioles beat Tigers for 4th straight
Campuses surrounded by troops
Khomeini dies
Iran's president named as leader

1981

आर्थिक सुधारवादी हु याओबंग चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने

1986

इसी वर्ष आंदोलन की नींव पड़ी. सामाजिक एवं राजनीतिक सुधार के लिए पहली बार हजारों की संख्या में चीनी विद्यार्थियों ने विरोध मार्च निकाला.

1987

हु याओबंग ने खुलकर 1986 के छात्र आंदोलन की निंदा नहीं की इस कारण चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अन्य नेताओं ने उनकी आलोचना की. अंततः याओबंग को जबरन इस्तीफा देने को मजबूर किया गया.

याओबंग के बाद झाओ जियांग चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नए महासचिव बने और हार्ड लाइनर ली पेंग को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाईना का प्रीमियर बनाया गया. यहीं से सरकार ने आंदोलन को खत्म करने की योजना बनानी शुरू की.

15 अप्रैल, 1989

अचानक ही हु याओबंग की संदेहास्पद मृत्यु हो गई जिसकी सूचना पूरे चीन में फैलने लगी. विद्यार्थी जगह-जगह इकट्ठा होकर उन्हें श्रद्धांजलि देने लगे.

17 अप्रैल, 1989

मेमोरियल में भीड़ बड़ी संख्या में जुटने लगी और छात्र भावनात्मक होकर बीजिंग के तियानमेन चौक पर इकट्ठा होने लगे.

18 अप्रैल, 1989

बीजिंग विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने एक अभूतपूर्व पैदल मार्च निकाला जो कि शहर से तियानमेन चौक तक था. यहीं पर उन्होंने सरकार से सात मांगो की घोषणा की. ग्रेट हाल ऑफ द पीपुल के सामने सैकड़ों विद्यार्थियों ने बैठ कर विरोध प्रदर्शन जताया.

19 अप्रैल, 1989

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के केंद्रीय सेंटर जोंगनहाई के शिन्हुआ द्वारा के सामने भी विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में विरोध प्रदर्शन किया.

20 अप्रैल, 1989

इसी दिन चीनी कम्युनिस्ट सरकार के द्वारा पहली बार विद्यार्थियों के ऊपर पुलिस के माध्यम से हमला करवाया गया. पुलिस के द्वारा किए गए हमले में कुछ विद्यार्थी चोटिल हुए और उन्होंने वापस विश्वविद्यालय के कैंपस में आकर अपने साथियों को इसकी जानकारी दी.

इस पूरी घटना को शिन्हुआ द्वारा खूनी घटना कहा गया.

इस घटना के बाद विद्यार्थियों ने अपनी कक्षाओं का बहिष्कार करना शुरू किया.

21 अप्रैल, 1989

लगभग 50,000 से अधिक बीजिंग के विद्यार्थियों ने तियानमेन चौक में आकर प्रदर्शन में हिस्सा लिया.

22 अप्रैल, 1989

हु याओबंग का अंतिम संस्कार किया गया उसी दौरान छात्र नेताओं ने घुटने में बैठकर उन्हें श्रद्धांजलि दी. यहीं पर उन्होंने ली पेंग से अपने मांगों को मानने पर बल दिया लेकिन ली पेंग ने उनसे मिलने से भी इंकार कर दिया.

विद्यार्थियों के द्वारा किए गए इस कृत्य के बाद पूरे बीजिंग के नागरिकों में विद्यार्थियों के प्रति भावनात्मक पक्ष और मजबूत होता चला गया.

23 अप्रैल, 1989

कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव झाओ जियांग अपनी विदेश यात्रा में उत्तर कोरिया चले गए और इस दौरान ली पेंग ने सरकार के भीतर चल रहे आंदोलन को लेकर सभी वार्ताओं में नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया.

26 अप्रैल, 1989

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व कर्ताओं ने अपने आधिकारिक मुखपत्र पीपुल्स डेली में एक संपादकीय प्रकाशित किया जिसमें आंदोलन कर रहे विद्यार्थियों को देश विरोधी करार दिया गया।

27 अप्रैल, 1989

इस संपादकीय से आक्रोशित होकर 50,000 से अधिक विद्यार्थियों ने तियानमेन चौक पर रैली निकाली।

28 अप्रैल, 1989

ली पेंग ने एक और संपादकीय प्रकाशित किया जिसमें इस आंदोलन के पीछे किसी छोटे समूह के काले हाथ होने और कुछ सरकार विरोधी तत्व के द्वारा इसका नेतृत्व किए जाने की बातें कही गई. इस संपादकीय में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के अधिकारियों को कम्युनिस्ट समर्थित विचार सिखाने पर जोर दिया.

30 अप्रैल, 1989

झाओ जियांग उत्तर कोरिया से वापस चीन लौटे और उन्हें जानकारी मिली कि बीजिंग यूनिवर्सिटी के 70% से अधिक छात्र कक्षाओं का बहिष्कार कर रहे हैं. इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय मीडिया समूहों में भी इस आंदोलन का कवरेज लगातार बढ़ता जा रहा है.

1 मई, 1989

झाओ व ली पेंग के बीच नोकझोंक हुई और झाओ ने सुरक्षा खतरा मानते हुए विद्यार्थियों के प्रदर्शन को सही ठहराया.

2 मई, 1989

लगभग 40 कॉलेजों के विद्यार्थियों ने बीजिंग विश्वविद्यालय में एकजुट होकर बीजिंग स्टूडेंट डायलॉग डेलिगेशन का गठन किया.

4 मई, 1989

तियानमेन चौक पर मार्च निकालकर विद्यार्थियों ने वर्ष 1919 के छात्र आंदोलन के वर्षगांठ को बड़े उत्साह से मनाया.

11 मई, 1989

कुछ छात्र नेताओं ने इस बात पर चर्चा की और सरकार की नीयत पर संदेह जताया जिसके बाद उन्होंने भूख हड़ताल करने की बात की।

12 मई, 1989

चीनी छात्र नेता चाई लिंग के द्वारा बीजिंग विश्वविद्यालय में बेहद ही भावनात्मक भाषण दिया गया जिसके बाद सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थियों ने भूख हड़ताल में शामिल होने की घोषणा की.

13 मई, 1989

सरकार को विद्यार्थियों के द्वारा किए जा रहे भूख हड़ताल की जानकारी प्राप्त हुई. झाओ जियांग के करीबी यान मिंगफु ने विद्यार्थियों से मुलाकात की व उन्होंने चीन का दौरा करने वाले सोवियत के नेता मिखाइल गोर्बाचेव के सामने शर्मिंदा ना कर देशभक्ति दिखाने की बात कही.

आंदोलन कर रहे विद्यार्थियों ने गोर्बाचेव के आने से पहले तियानमेन चौक खाली करने की बात कही.

14 मई, 1989

भूख हड़ताल का समर्थन कर रहे विद्यार्थी तियानमेन चौक पर डटे रहे. ली पेंग ने झाओ पर पार्टी में दरार डालने का आरोप लगाया.

15 मई, 1989

गोर्बाचेव चीन पहुंचे. इस यात्रा को कवर करने के लिए पहुंची अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान भूख हड़ताल कर रहे विद्यार्थियों ने बड़ी तेजी से आकर्षित किया.

17 मई, 1989

चीन के इतिहास का सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन किया गया जिसमें 20 लाख से अधिक लोग शामिल हुए. बीजिंग के साथ-साथ चीन के 20 से अधिक शहरों में इस प्रदर्शन को अंजाम दिया गया. प्रदर्शनकारियों ने डेंग और ली पेंग को अपना पद छोड़ने की बात कही.

ली पेंग ने पोलित ब्यूरो की बैठक में डेंग के सामने झाओ जियांग पर आरोप लगाते हुए कहा कि इनकी वजह से ही छात्र आंदोलन को बढ़ावा मिला है और अब यह एक जन सुरक्षा का मुद्दा बन चुका है.

इसी बैठक में पहली बार मार्शल लॉ लगाने की बात की गई.

19 मई, 1989

पीपुल्स लिबरेशन आर्मी अर्थात चीन की कम्युनिस्ट सेना को मार्शल लॉ के लिए तैयार किया गया. मार्शल लॉ की तैयारी को देखते हुए बीजिंग के तमाम कारखानों के कर्मचारियों ने विद्यार्थियों का साथ देने के लिए हड़ताल में जाने की घोषणा की.

दूसरे शहरों से निकलकर विद्यार्थी बीजिंग पहुंचने लगे.

20 मई, 1989

चीनी सरकार ने मार्शल लॉ की घोषणा की.

21 मई, 1989

बीजिंग के बाहर के विद्यार्थियों ने अपना पूरा समर्थन जताया. भूख हड़ताल को जारी रखने के लिए बड़े स्तर पर विद्यार्थी सामने आए. बीजिंग के नागरिकों ने विद्यार्थियों पर कहर ढाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के कम्युनिस्ट सैनिकों को रोकने का प्रयास किया.

23 मई, 1989

पूरे शहर में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के जवान सादे कपड़ों में विभिन्न समूह में शामिल हो गए. अंतरराष्ट्रीय नेताओं ने चीन को शांतिपूर्ण तरीके से समस्या का समाधान निकालने की बात कही.

तियानमेन चौक पर 3 प्रदर्शनकारियों ने चीनी तानाशाह माओ जेडोंग के तस्वीर को खराब किया.

27 मई, 1989

झाओ जियांग को हटाकर जियांग जेमिन को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का नया महासचिव नियुक्त किया गया.

हांगकांग में चीन में लोकतंत्र लाने के लिए एक कंसर्ट आयोजित किया गया और लाखों की संख्या में हांगकांग डालर विद्यार्थी आंदोलन के लिए इकट्ठा किए गए.

29 मई, 1989

बीजिंग पुलिस ने ऑटोनॉमस फेडरेशन के कर्मचारियों को गिरफ्तार किया जिसके बाद विद्यार्थियों ने लोकतंत्र की देवी की प्रतिमा को तियानमेन चौक पर स्थापित किया.

02 जून, 1989

लेखक लियू शियाओबो समेत तीन अन्य लोगों ने भूख हड़ताल की शुरुआत की और उनके भावनात्मक भाषण में बड़ी संख्या में लोगों को तियानमेन चौक की ओर आकर्षित किया.

सरकार ने मार्शल लॉ के लिए बुलाए गए जवानों को निर्देश दिया व उन्हें तियानमेन चौक को तत्काल खाली कराने की बात कही.

03 जून, 1989

पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के कम्युनिस्ट सैनिकों का सामना विरोध कर रहे स्थानीय निवासियों से हुआ और इसके बाद बीजिंग के सभी अस्पतालों में घायलों की संख्या बढ़ती गई.

जैसे-जैसे हथियारबंद चीनी कम्युनिस्ट सैनिक बीजिंग में आगे बढ़ रहे थे वैसे ही उन्होंने स्थानीय नागरिकों की भीड़ पर गोली चलाना शुरु कर दिया. इस गोलीबारी में सैकड़ों लोग मारे गए.

इसके बाद स्थानीय निवासियों ने अपने घरों के बर्तनों को अपने छत से उन पर फेंकना शुरू किया जिसके बाद कम्युनिस्ट सैनिकों ने पूरी बिल्डिंग और पूरे घरों में भी गोलीबारी शुरू कर दी.

सैकड़ों लोग अपने घरों के भीतर ही उस रात मारे गए.

एक कनाडाई पत्रकार बताया था कि इसी रात चीनी सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के भतीजे की भी उसके घर के किचन में कम्युनिस्ट सैनिकों के द्वारा हत्या कर दी गई थी.

सिर्फ इतना ही नहीं चीनी कम्युनिस्ट सैनिकों ने उन होटल और रुकने के स्थानों में भी हमला किया जहां अंतरराष्ट्रीय मीडिया समूहों के विदेशी पत्रकार मौजूद थे.

04 जून, 1989

सेना के जवान तियानमेन चौक पहुंच गए. मिलिट्री की गाड़ियां चौक को चारों ओर से घेर चुकी थी. मिलिट्री टैंक ने विद्यार्थियों पर हमला शुरू किया.

जवानों ने आंसू गैस के गोले छोड़े जिसकी वजह से कई विद्यार्थी घायल हुए. झोंगनहाई के सामने खड़े विद्यार्थियों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया.

चश्मदीदों की रिपोर्ट और विदेशी एंबेसी से मिली जानकारियों के अनुसार तब तक शहर के सभी अस्पताल घायलों से भर चुके थे.

रेडियो और टेलीविजन स्टेशन से लगातार आपातकाल का निर्देश दिया जा रहा था और लोगों से अपने घर लौटने का आदेश दिया जा रहा था.

टीवी और रेडियो के माध्यम से यह भी कहा जा रहा था कि सेना मार्शल लॉ के दौरान किसी भी तरह की कोताही नहीं बरतेगी.

टैंक के माध्यम से लोकतंत्र की देवी की प्रतिमा को पूरी तरह कुचल दिया गया.

तियानमेन चौक से निकलने के सभी रास्तों को बंद कर दिया गया और विद्यार्थी अंदर ही फंस गए.

सुबह से लेकर रात तक चीनी कम्युनिस्ट सैनिकों के द्वारा विद्यार्थियों की हत्या की गई.

एक विदेशी पत्रकार ने एक अकेले आंदोलनकारी की उस ऐतिहासिक तस्वीर को खींचा जो चीनी कम्युनिस्ट सेना के टैंक के सामने अकेला खड़ा था. टैंक मैन की इस तस्वीर ने पूरे वैश्विक मीडिया में अपनी जगह बनाई.

05 जून, 1989

वैश्विक नेताओं ने चीन के द्वारा किए गए इस दमनकारी नीतियों की निंदा करनी शुरू की. छात्र नेता और अन्य एक्टिविस्ट चीन छोड़कर भागने की तैयारी करने लगे. कई पालक अपने बच्चों की खोज में तियानमेन चौक पहुँचे जहाँ उन्हें अपने बच्चों की लाशें मिली.

06 जून, 1989

चीन में स्थित विदेशी दूतावासों ने अपने नागरिकों को चीन छोड़ने के निर्देश दिए गए.

08 जून, 1989

ली पेंग ने टेलीविजन में एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट सेना को धन्यवाद दिया.

12 जून, 1989

चीनी कम्युनिस्ट सरकार ने पूरे देश में सभी तरह के छात्र एवं कर्मचारी यूनियन पर प्रतिबंध लगा दिया.

16 जून, 1989

प्रदर्शन कर रहे छात्र नेताओं की गिरफ्तारी शुरू की गई और 1000 से अधिक छात्र नेताओं को गिरफ्तार किया गया.

17 जून, 1989

बीजिंग के 8 नागरिकों को मौत की सजा दी गई.

20 जून, 1989

चीन ने सभी ट्रैवल वीजा पर रोक लगा दी ताकि आंदोलनकारी चीन से भागना सके.

तियानमेन चौक

नरसंहार चित्रों में

अंतरराष्ट्रीय मीडिया और तियानमेन चौक नरसंहार

जिस दौरान चीन में कम्युनिस्ट सरकार के द्वारा तियानमेन चौक नरसंहार को अंजाम देने की योजना बनाई जा रही थी उस दौरान चीन में अंतरराष्ट्रीय मीडिया समूह का एक बडा वर्ग उपस्थित था।

इन मीडिया समूहों में बीबीसी, वॉइस आफ़ अमेरिका, सीएनएन, कोलंबिया ब्राडॅकास्टिंग सिस्टम, अमेरिकन ब्राडॅकास्टिंग कंपनी और नेशनल ब्राडॅकास्टिंग कंपनी शामिल थे।

चूँकि नरसंहार से ठीक पहले तत्कालीन सोवियत संघ के नेता मिखाइल गोर्बाचेव चीन का दौरा कर रहे थे इसीलिए अंतरराष्ट्रीय मीडिया बड़े स्तर पर चीन में हो रहे घटनाक्रमों को कवर कर रही थी।

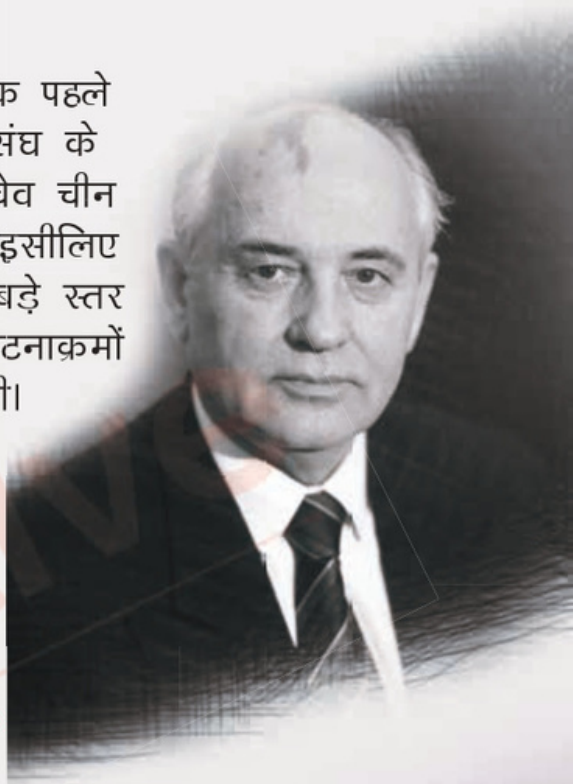

सोवियत संघ नेता मिखाइल गोर्बाचेव

EPOCH WEEKEND
Vindicating Tiananmen Square
Newsweek
Bloodbath
The Shattered Dream
CHINA / 1989
The Washington Post
The New York Times
"All the News That's Fit to Print"
TROOPS ATTACK AND CRUSH BEIJING PROT
THOUSANDS FIGHT BACK, SCORES ARE K
Khomeini, Imam of Iran And Foe of U.S., Is Dead
The San Diego Union
Army steps up battle for Beij
Daily Expr
LONE HERO
The Daily Telegraph
army is preparing to fight the army in Pe
Crush Protesters
FINANCIAL TIMES
Gunfire in Peking as toll rises
Big election win seen for Solidarity
TIMES
dead as tanks crush heroic resistance
protesters massacred
Troops Roll Through Beijing to C
Hundreds Feared Killed as Chine
Los Angeles Times
Troops Fire on Beijing Crowds
Troops Fire 100 Dead, 400 Hurt; Square Is Recaptured
Orioles beat Tigers for 7th straight: 1C
THE SUN
Acts of butchery against demonstrators stun China
Khomeini dies; Iran's president named as leader
Campuses surrounded by troops
The Guardian
Civil war threatened in China
Beijing's people defiant amid a burning city
DAILY Mirror
ONE MAN'S COURAGE THAT SAYS:
OUR FREEDOM

मार्शल लॉ से पहले

तियानमेन की घटना से पहले Voice of America व बीबीसी स्थानीय निवासियों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व भर के लोगों के लिए सूचना का एक महत्वपूर्ण साधन था।

इन समाचार समूहों में उन जानकारियों को भी शामिल किया जाता था जो स्थानीय चीनी मीडिया नहीं देती थी।

स्थिति ऐसी हो गई थी कि लोकतंत्र समर्थकों से जुड़ी जानकारी देने के लिए जो Voice of America 8 घंटे का चीनी भाषा में अपना प्रोग्राम चलाया करता था उसने समय की अवधि बढ़ाकर 11 घंटे कर लिया।

13 से 19 मई के बीच चीनी मीडिया समूहों को पाबंदियों के साथ कुछ रिपोर्ट करने की छूट दी गई।

मार्शल लॉ के बाद

मार्शल लॉ लगने के बाद स्थानीय मीडिया समूहों के बजाय अंतरराष्ट्रीय मीडिया समूहों के प्रति अधिक विश्वास बढ़ गया।

लेकिन विदेशी मीडिया समूह को अनेकों प्रतिबंध का सामना करना पड़ा। तियानमेन चौक जाने पर भी पाबंदी लगा दी गई।

विदेशी पत्रकारों के साथ नरसंहार के दिन काफी झड़प की घटनाएं भी सामने आई। अंततः विदेशी मीडिया समूहों को इस पूरे हिंसक वारदात के दौरान कवरेज से दूर रखा गया।

वैश्विक प्रतिक्रिया

जिस तरह से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने लोकतंत्र की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों के इस आंदोलन को कुचला था उसे पूरे विश्व ने देखा। दुनिया के तमाम बड़े नेताओं और राष्ट्र अध्यक्षों ने इस घटना की निंदा की।

संयुक्त राष्ट्रीय के तत्कालीन महासचिव जेवियर पेरेज ने इस पूरी घटना पर चिंता जाहिर की थी।

यूरोपीय आर्थिक कम्युनिटी ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इस अत्याचार की निंदा की थी और सभी तरह के उच्च संबंध और ऋण खत्म कर दिए थे। इसके अलावा उन्होंने मानवाधिकार के मामले में संयुक्त राष्ट्र के शरणार्थी मामले के हाई कमिशन में चीन की निंदा करते हुए प्रस्ताव लाने की योजना बनाई थी।

आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री बॉब हॉक ने इस घटना की निंदा की थी और तत्कालीन आस्ट्रेलियाई सरकार ने चीनी विद्यार्थियों को 4 वर्षों के लिए शरण देने की अनुमति दी थी।

तत्कालीन पश्चिम बर्लिन स्थित सोशलिस्ट यूनिटी पार्टी ऑफ वेस्ट बर्लिन ने इस पूरे घटना की कड़ी आलोचना की थी।

म्यांमार में तत्कालीन विपक्षी नेता आंग सान सू की ने कड़े शब्दों में चीनी कम्युनिस्ट सरकार की निंदा की थी और कहा था कि ऐसा ही म्यांमार में हुआ और हम चाहते थे कि पूरा विश्व म्यांमार के साथ खड़ा हो, उसी तरह हम चीनी विद्यार्थियों के साथ खड़े हैं।

चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट सरकार ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा किए गए इस नरसंहार का समर्थन किया था।

फ्रांसीसी विदेश मंत्री रोलैंड डुमास ने स्पष्ट रूप से कहा था कि वह निहत्थे प्रदर्शनकारियों की भीड़ के खूनी दमन से निराश हैं।

तत्कालीन पूर्वी जर्मनी की कम्युनिस्ट सरकार जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक में चीनी कम्युनिस्ट सरकार के समर्थन में अपना पक्ष जाहिर किया था।

चीनी मुख्य भूमि पर हुए इस नरसंहार का असर हांगकांग पर भी पड़ा था। हांगकांग में 2,00,000 से अधिक लोगों ने चीनी कम्युनिस्ट सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया था। यह विरोध प्रदर्शन काफी लंबे समय तक चलता रहा।

तत्कालीन हंगरी की सरकार ने इस घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया दी थी। हंगरी के विदेश मंत्री ने इस पूरे घटनाक्रम को 'भयानक त्रासदी' के रूप में वर्णित किया था और इसे एक 'सदमा' कहा था। इसके अलावा यह भी कहा गया था कि मौलिक मानवाधिकार विशेष रूप से किसी भी देश के आंतरिक मामलों तक ही सीमित नहीं रह सकते हैं। हंगरी में चीनी दूतावास के बाहर प्रदर्शन भी किए गए थे। हंगरी यूरोप का एकमात्र ऐसा देश था जिसने इस नरसंहार की घटना के बाद चीन के साथ संबंधों को काफी कम कर दिया।

भारत में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी विश्व की एकमात्र राजनीतिक पार्टी थी जिसने विरोध प्रदर्शन के दमन का जय कार करने के लिए प्रस्ताव पारित किया और कहा कि आंतरिक रूप से समाजवाद को बर्बाद करने के लिए इस साम्राज्यवादी प्रयास को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और पीपुल्स लिबरेशन आर्मी द्वारा सफलतापूर्वक विफल कर दिया गया।

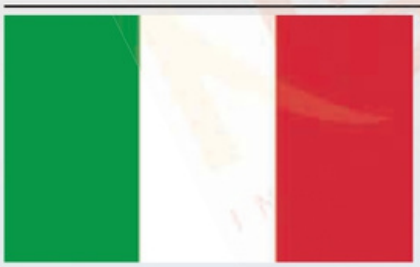

तत्कालीन इटैलिक कम्युनिस्ट पार्टी के नेता ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा किए गए इस कृत्य की निंदा की।

तत्कालीन जापानी सरकार ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा किए गए इस नर संहार को असहनीय बताया और चीन को दिए गए सभी ऋण रोक दिए गए।

मकाऊ में 1,50,000 लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया और यह प्रदर्शन लंबे समय तक चला।

मंगोलिया के कई सुधार वादियों और कार्यकर्ताओं ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं को समझा और इसके बाद पश्चिमी यूरोप और सोवियत संघ में लोकतांत्रिक बदलाव की तरफ पहल की।

डच सरकार ने चीनी सरकार के साथ सभी तरह के राजनयिक संबंध ठंडे बस्ते में डाल दिए।

फिलिपिंस के तत्कालीन राष्ट्रपति ने इस घटना पर दुख जताया और उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट सरकार से मांग की कि जल्द से जल्द कदम उठाए जाएं और उनकी कम्युनिस्ट सेना के द्वारा मारे जा रहे लोगों को बचाया जाए।

पोलैंड सरकार के प्रवक्ता ने इस पूरी घटना को त्रासदी करार दिया था। उन्होंने मारे गए लोगों और उनके परिवारों के प्रति संवेदना जताई थी।

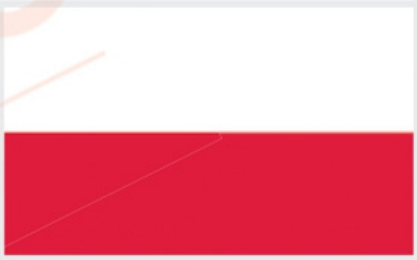

रोमानिया के कम्युनिस्ट तानाशाह ने चीनी कम्युनिस्ट सरकार के द्वारा किए गए इस नरसंहार और सैन्य दमन की प्रशंसा की थी।

ताइवान अर्थात रिपब्लिक आफ चाइना ने 4 जून को इस घटना के बाद चीनी मुख्य भूमि की कम्युनिस्ट सरकार के द्वारा किए गए इस नरसंहार की कड़ी निंदा की थी। ताइवान ने कहा था कि आज सुबह अंततः चीनी कम्युनिस्ट सरकार ने सेना का उपयोग कर शांति पूर्ण तरीके से आंदोलन कर रहे लोकतंत्र समर्थक विद्यार्थियों और अन्य लोगों का दमन किया और इसके परिणाम स्वरूप काफी लोगों की जान गई।

सिंगापुर के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने चीनी कम्युनिस्ट सरकार के द्वारा उठाए गए इस कदम की निंदा की थी।

तत्कालीन सोवियत संघ के नेता मिखाईल गोर्बाचोव में स्पष्ट रूप से इस घटना की निंदा नहीं की लेकिन उन्होंने सुधार की बात कही थी।

दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्रालय ने गंभीर चिंता व्यक्त की। बयान में उन्होंने शांति से इस मुद्दे को हल करने की बात कही।

स्वीडन की तत्कालीन सरकार ने पूरी तरह से चीन के साथ राजनयिक संबंध रोक दिए।

तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री मार्गेट थैचर ने इस घटना की निंदा की और इस घटना के बाद उन्होंने हांगकांग से आने वाले नागरिकों के लिए इमीग्रेशन सिस्टम को और सरल करने का भरोसा दिलाया।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने पूरी तरह से इस घटना की कड़ी आलोचना की। राष्ट्रपति जार्ज एचडब्ल्यू बुश ने सैन्य बिक्री खत्म कर दी और चीन का दौरा भी रद्द कर दिया। पूरे अमेरिका में बड़े स्तर पर चीन के विरोध में प्रदर्शन देखे गए। अमेरिका में चीन के प्रति स्थानीय नागरिकों के मन में सकारात्मकता भी घटती गई और यह विश्वास 72% से गिरकर 34% पर आ गया।

कनाडा में चीनी मूल के नागरिकों के द्वारा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन किया गया। कनाडा की राजधानी टोरंटो में 30,000 से अधिक प्रदर्शनकारियों ने हिस्सा लिया।

चाई लिंग

1989 में चाई लिंग 23 वर्षीय बाल मनोविज्ञान की स्नातक छात्रा थी जो अध्ययन कर रही थी। वर्ष 1989 में हुए लोकतंत्र की मांग को लेकर प्रदर्शनों में चाई ने भूख हड़ताल का नेतृत्व किया था।

डेंग ज़ियोपिंग

यह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता थे और इनका चीन में हुए सांस्कृतिक क्रांति में महत्वपूर्ण हाथ था। तियानमेन चौक नरसंहार की घटना के दौरान ये चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के हार्ड लाइनर नेताओं के साथ थे।

किसकी क्या भूमिका थी ???

फेंग कोंगडे

फेंग बीजिंग विश्वविद्यालय में भौतिकी विषय में अध्ययन करने वाला एक 22 वर्षीय छात्र था। फेंग और उसकी पत्नी चाई दोनों ने इस आंदोलन में हिस्सा लिया था। नरसंहार के बाद दोनों पेरिस भागने को मजबूर हुए।

हु याओबंग

ये 1980 से 1987 तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव थे। लोकतंत्र की मांग कर रहे छात्रों का समर्थन करने और कम्युनिस्ट पार्टी में राजनीतिक सुधार करने की वजह से पार्टी के हार्ड लाइनर नेताओं ने इन्हें पार्टी से बाहर कर दिया व इनकी मौत के बाद ही पूरे चीन में आंदोलन तेजी से बढ़ा।

ली पेंग

ली पेंग चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के हार्डलाइनर नेताओं में से एक थे। इनके दबाव की वजह से ही मार्शल लॉ की घोषणा की गई और सेना को क्रैकडाउन के लिए आगे बढ़ाया गया।

वांग डेन

20 वर्षीय छात्र इस पूरे लोकतांत्रिक आंदोलन का मुख्य चेहरा था। नरसंहार के बाद इसे गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में डाल दिया गया। जेल से निकलने के बाद यह चीन से निकलने में कामयाब हुआ और अमेरिका में जा बसा।

झाओ ज़ियांग

झाओ जियांग इस पूरी घटना के दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव थे। हालांकि झाओ जियांग छात्रों की मांग को सिरे से नहीं नकार रहे थे लेकिन ली पेंग व डेंग जियोपिंग के दबाव में आकर उन्हें चुप रहना पड़ा।

इस विषय पर पुस्तकें जो पढ़नी चाहिए

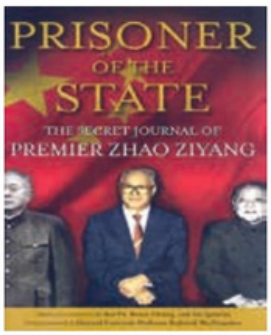

प्रिजनर ऑफ द स्टेट : द सीक्रेट जर्नल ऑफ प्रीमियर झाओ जियांग

इस पुस्तक में तियानमेन चौक नरसंहार के दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव रहे झाओ जियांग की पूरी जीवनी है। इस पुस्तक को उन्होंने बहुत ही सावधानी से लिखा और उनके मृत्यु के बाद इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया।

इस पुस्तक में तियानमेन चौक नरसंहार की घटना के दौरान हुए अंदरूनी वार्तालाप और पोलित ब्यूरो की बैठकों के सभी घटनाक्रम मौजूद हैं।

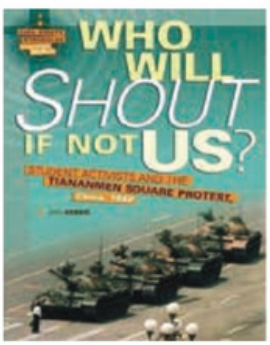

हू विल शाऊट इफ नॉट अस?

ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी बुक्स द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में पूरे नरसंहार की घटना पर टाइमलाइन सहित विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। इस पुस्तक में घटना के एक्सक्लूसिव तस्वीरें भी मौजूद हैं।

द तियानमेन पेपर्स

इस पुस्तक में तियानमेन चौक में हुई घटना के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से लेकर तत्कालीन घटनाओं तक की वस्तु स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक पूरी घटना को समझने के लिए सबसे उपयुक्त साधन है।

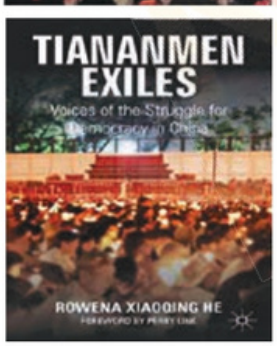

तियानमेन एक्साइल्स

यह किताब उन लोगों की कहानी बताती है जो नरसंहार से बचकर भाग निकले। वह लोग जो लोकतंत्र की मांग कर आंदोलन कर रहे थे लेकिन चीनी कम्युनिस्ट सेना ने उन्हें मारने की योजना बनाई और वे जान बचाकर विश्व के दूसरे देशों में जाकर बस गए। इस पुस्तक में ऐसे लोगों ने अपनी कहानियों का जिक्र किया है जो आज भी चीन में लोकतंत्र की स्थापना को देखना चाहते हैं।

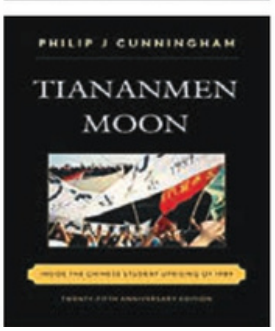

तियानमेन मून

यह किताब नरसंहार की घटना से अधिक लोकतंत्र की मांग कर रहे छात्रों के आंदोलन पर अधिक केंद्रित है। इस पुस्तक में आंदोलन के सभी पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी गई है।

इस पुस्तक में यह भी बताया गया है कि कैसे इस आंदोलन को बड़े स्तर पर आकार दिया गया जिसके बाद इसकी चिंगारी पूरे चीन में फैलने लगी।

हमारे बारे में

दशकों से चली आ रही मीडिया की पक्षीय भूमिकाओं के बीच **The Narrative** एक स्वतंत्र मीडिया समूह है जिसका मूल उद्देश्य राष्ट्रहित के विचारों को स्थापित करना, उसका प्रसार करना एवं उसका निर्माण करना है।

बीते 7 दशकों में देश ने जैसी एक पक्षीय और एकरूपता की पत्रकारिता देखी है उस परिदृश्य से मूल पत्रकारिता को निकालकर हमने भारतीय दृष्टिकोण के साथ एक नया विमर्श खड़ा करने का प्रयास हम कर रहे हैं।

चूँकि भारत राष्ट्र भौगोलिक, प्राकृतिक एवं सामरिक दृष्टि से विश्व में सबसे महत्वपूर्ण हैं, तो यहाँ से निकलने वाले विमर्श भी उतने ही महत्वपूर्ण होने चाहिए। यही कारण है कि हम द नैरेटिव के माध्यम से वैश्विक वर्ग में भी सूचनाओं में माध्यम से विमर्श स्थापित कर रहे हैं।

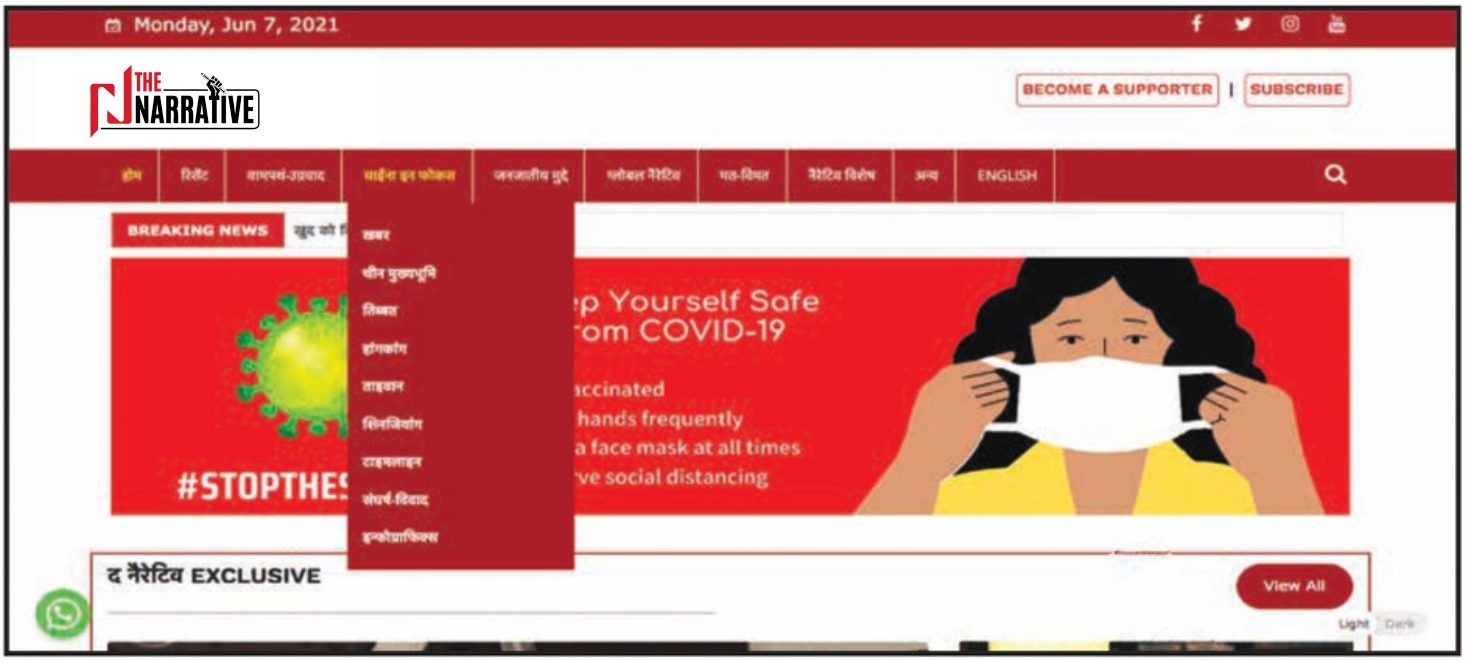

वर्तमान समय में चीन जिस तरह से वैश्विक खतरे के रूप में उभर रहा है और चूँकि चीन भारत के लिए भी खतरा हो सकता है, ऐसे में भारतीयों को चीन के विषय में अधिक से अधिक जानकारी होना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से हमने द नैरेटिव में विशेष तौर पर 'चाईना इन फोकस' के नाम से अलग सेगमेंट रखा है जिसमें चीन से जुड़ी सभी खबरे, विश्लेषण, विचार समेत तथ्य एवं आंकड़ें दिए जाते हैं।

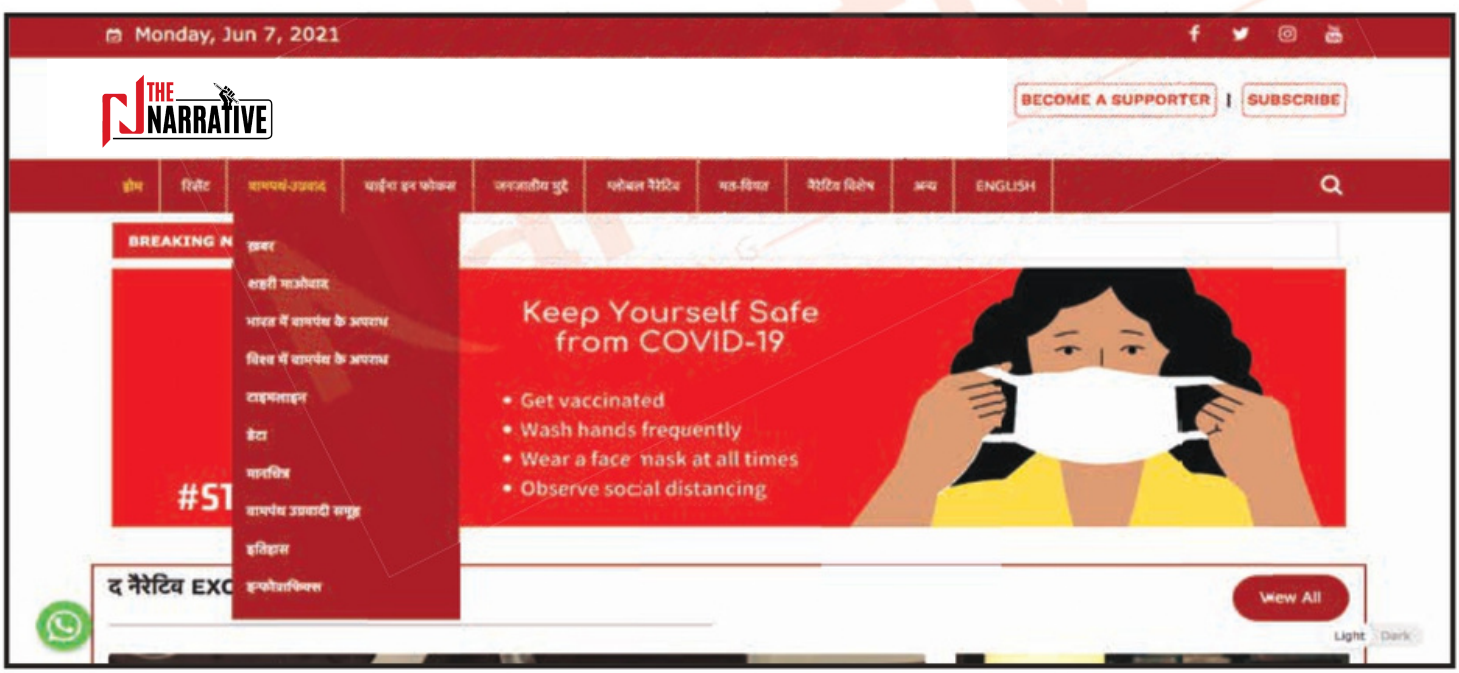

इसके अलावा भारत में आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से माओवादी–आतंकवाद (वामपंथ उग्रवाद) एक बड़ा खतरा है। बीते 5 दशकों से यह भारत को अंदर से खोखला करने में लगा हुआ है। इस विषय पर भी समाज में व्यापक स्तर पर बड़ी जागरूकता नहीं है। हम द नैरेटिव के माध्यम से माओवाद–नक्सलवाद और वामपंथ उग्रवाद एवं उनके शहरी सहयोगियों के विषय पर विस्तार से खबरें एवं विश्लेषण प्रकाशित करते हैं जिससे उनकी गतिविधियां और उनके सभी षड्यंत्र आम जनता तक पहुंच सके।

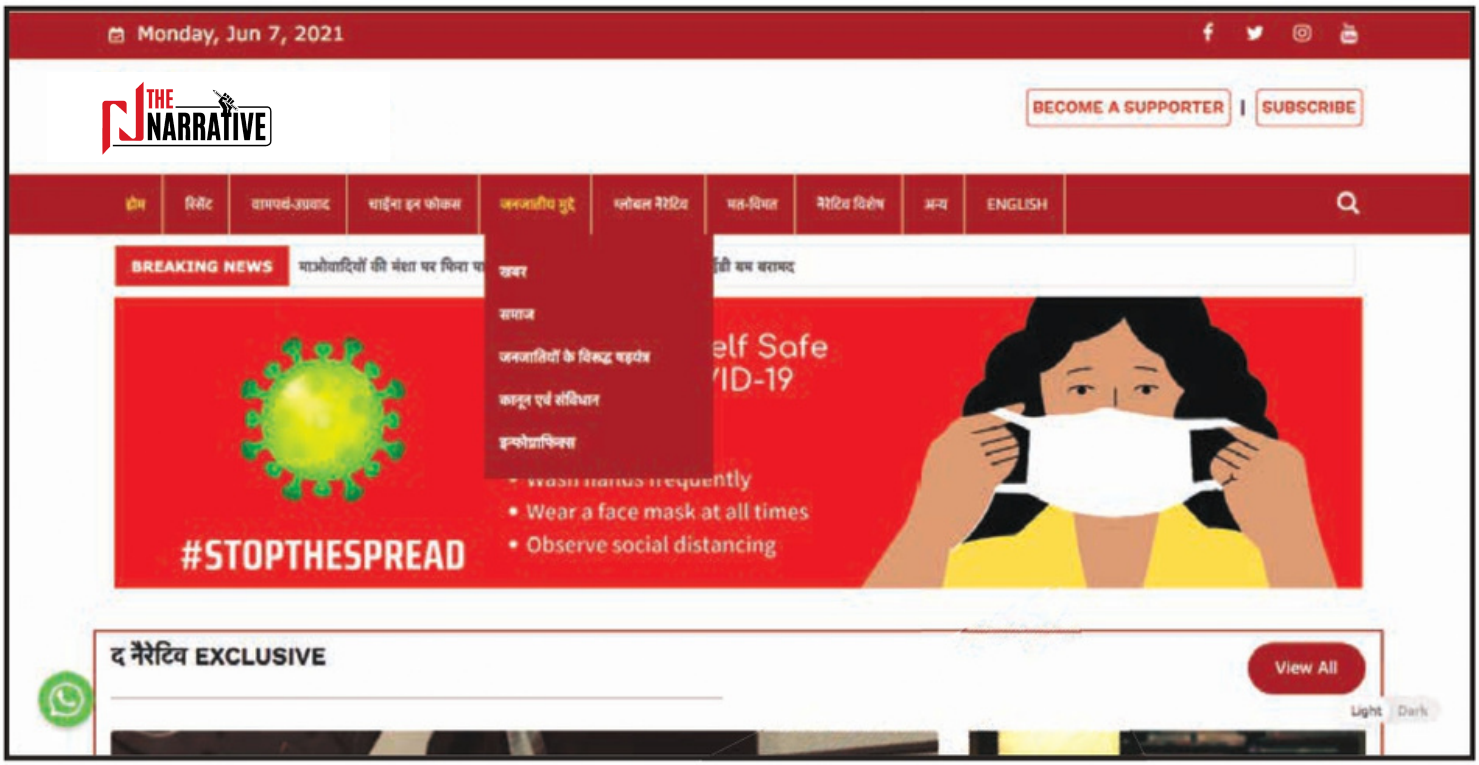

भारत में जनजाति समाज को लेकर भी विभिन्न तरह की भ्रांतियां फैलाई जाती हैं। जनजाति समाज की संस्कृति को नुकसान पहुंचाने के लिए भी विदेशी शक्तियां लगी हुई हैं। इसमें धर्मांतरण से लेकर उनका शोषण करने वाले लोग शामिल हैं। इससे जुड़ी सभी जानकारियां हम द नैरेटिव के माध्यम से सामने लाने का प्रयास करते हैं साथ षड़यंत्रकारियों के नापाक साजिशों को भी उजागर करते हैं।

वर्तमान में भी पूरा विश्व एक संक्रमणकाल से गुजर रहा है, भारत में भी विदेशी शत्रु शक्तियों की गतिविधियां भारतीय जयचंदों के साथ मिलकर काफी बढ़ चुकी है। हम ऐसी भारत विरोधी गतिविधियों को ना सिर्फ उजागर कर रहें हैं बल्कि उस विषय पर भारतीय परिप्रेक्ष्य में नया विमर्श भी खड़ा कर रहे हैं।

भारत ऐतिहासिक दृष्टि से भी विश्व की प्राचीनतम सभ्यता है, लेकिन बावजूद इसके यहाँ वर्तमान भारत के इतिहास को स्वतंत्रता के पश्चात से देखा जाता है। हम द नैरेटिव के माध्यम से प्राचीन भारत के वास्तविक इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, काल को लेकर समाज में जन–जागरण का कार्य भी कर रहे हैं।

आप सभी के अपार समर्थन के लिए सभी सुधी पाठकों, दर्शकों, सहयोगियों एवं समर्थकों का धन्यवाद। हम आगे भी और बड़े स्तर पर आपसे सहयोग एवं समर्थन की अपेक्षा है।

द नैरेटिव से व्हाट्सएप के माध्यम से जुड़ने के लिए आप 9713734000 पर अपना नाम व स्थान भेजकर जुड़ सकते हैं।

THE NARRATIVE

+91 7587396911

www.thenarrativeworld.com

/tnworldofficial /tnworldofficial